+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

YOJANA MAGAZINE ANALYSIS

(योजना पत्रिका विश्लेषण)

(वर्ष भर का पुनरावलोकन)

(December 2024)

(Part I)

TOPICS TO BE COVERED

- भारत में परिवर्तन का नया युग: प्रगति, चुनौतियां और भविष्य की विकास गाथा
- भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश का भावी प्रयोग
- सिकल सेल रोग के खिलाफ भारत का अभियान

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारत में परिवर्तन का नया युग: प्रगति, चुनौतियां और भविष्य की विकास गाथा

परिचय:

- वर्ष 2024 में भारत की परिवर्तनकारी यात्रा ने विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति हासिल की है। सरकार के स्वच्छता, जल संरक्षण और नवीकरणीय ऊर्जा पर बल दिए जाने के उल्लेखनीय परिणाम सामने आए हैं।

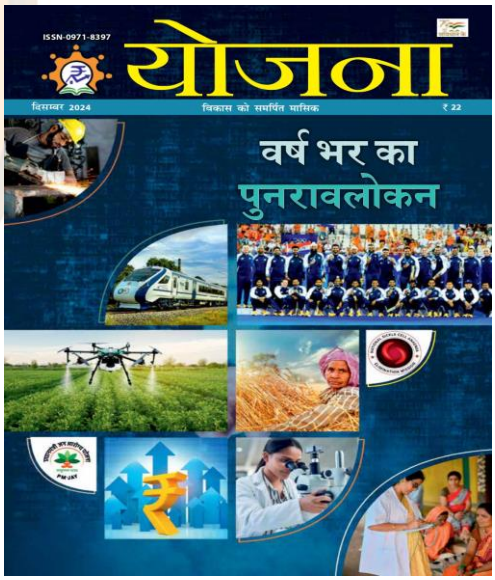

स्वास्थ्य सेवा में उल्लेखनीय सुधार:

- स्वच्छ भारत अभियान से स्वच्छता के क्षेत्र में सुधार आया है जिससे शिशु मृत्यु दर में कमी हुई है। जल जीवन मिशन ने लाखों ग्रामीण घरों को नल से जल की आपूर्ति से जोड़ा है जिससे जीवन की गुणवत्ता में सुधार हुआ है और महिलाओं का सशक्तिकरण हुआ है।
- स्वास्थ्य सेवा में सरकार ने उल्लेखनीय सुधार किए हैं। आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (AB-PMJAY) का विस्तार 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के सभी वरिष्ठ नागरिकों तक करने का ऐतिहासिक निर्णय 6 करोड़ लाभार्थियों की

गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा, वित्तीय सुरक्षा तक पहुंच और गरिमा सुनिश्चित करता है।

- राष्ट्रीय सिकल सेल रोग नियंत्रण कार्यक्रम का उद्देश्य इस आनुवंशिक विकार के प्रभाव को कम करना है।

प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना:

- हाल ही में शुरू की गई 'प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना' में भारत की नवीकरणीय ऊर्जा की खोज में एक बड़ा बदलाव लाने की क्षमता है।
- रूफटॉप (घर की छतों पर स्थापित सौर तंत्रों) सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इस पहल का उद्देश्य भारत के कार्बन फुटप्रिंट को कम करना और ऊर्जा आत्मनिर्भरता को बढ़ाना है।

सतत विकास लक्ष्यों के प्रति देश की प्रतिबद्धता:

- संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDG) के प्रति देश की प्रतिबद्धता नीति आयोग द्वारा संचालित SDG स्थानीयकरण की दिशा में उठाये ठोस प्रयासों में परिलक्षित होती है जो राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के साथ मिलकर काम करता है।
- लक्ष्य 1 (गरीबी उन्मूलन), 8 (सभ्य कार्य और आर्थिक विकास), और 13 (जलवायु संबंधित कार्रवाई) में उल्लेखनीय प्रगति देखी गई है।

- SDG इंडिया इंडेक्स 2023-24 में देश के लिए समग्र स्कोर 71 बताया गया है, जबकि 2020-21 में यह 66 और 2018 में 57 रहा।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में असाधारण प्रगति:

- भारत ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में असाधारण प्रगति की है जैसा कि ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स (GII) रैंकिंग में इसके महत्वपूर्ण सुधार से स्पष्ट है जो 81वें से 39वें स्थान पर पहुंच गया है। यह उपलब्धि नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए देश की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।
- इस प्रगति में अनुसंधान, नवाचार और उद्यमिता के लिए रणनीतिक दिशा प्रदान करते हुए 'अनुसंधान राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (ANRF)' का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। ANRF विशेष रूप से 'भारतजन' और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर वैश्विक भागीदारी (GPAI) जैसी पहलों के माध्यम से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का केंद्र बनने के लिए भारत के प्रयास को भी बढ़ावा दे रहा है।
- इसके अलावा सेमीकंडक्टर के विनिर्माण पर सरकार के जोर से देश की अर्थव्यवस्था और वैश्विक प्रौद्योगिकी परिदृश्य पर गहरा प्रभाव पड़ने की उम्मीद है। घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देकर भारत आयातित सेमीकंडक्टर पर निर्भरता कम कर सकता है, रोज़गार पैदा कर सकता है और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में योगदान दे सकता है।

- यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) के माध्यम से अक्टूबर, 2024 में 16.58 अरब का आंकड़ा पार हुआ जो डिजिटल लेनदेन में वृद्धि को दर्शाता है।

उपसंहार:

- केंद्रीय बजट 2024-25 उत्पादकता, रोजगार और नवाचार पर ध्यान केंद्रित करते हुए विकसित, समृद्ध और न्यायसंगत भारत के लिए रणनीति की रूपरेखा तैयार करता है।
- लेकिन प्रगति के बावजूद अनेक महत्वपूर्ण चुनौतियां बनी हुई हैं। इन कमियों को दूर करने के लिए निरंतर प्रयास, कुशल संसाधन आवंटन और प्रभावी निगरानी महत्वपूर्ण हैं। स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच, शिक्षा और आर्थिक अवसरों में असमानताओं को दूर करना भी आवश्यक है।
- जैसे-जैसे हम 2025 की ओर अग्रसर हो रहे हैं हम 2024 में हासिल गति को आगे बढ़ाते हुए नवाचार, उद्यमशीलता और सामाजिक जिम्मेदारी की संस्कृति को बढ़ावा दें। सामूहिक प्रयास और लचीलेपन के साथ भारत आशा और समृद्धि की किरण के रूप में उभरेगा जहां प्रत्येक व्यक्ति की गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और आर्थिक अवसरों तक पहुंच होगी।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश का भावी प्रयोग:

परिचय:

- भारत अपने जनसांख्यिकीय परिवर्तन के मामले में एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। इसकी कार्यशील आयु वाली आबादी (15 वर्ष से 64 वर्ष की आयु के बीच) का हिस्सा 2011 में 59 प्रतिशत से बढ़कर 2021 में 63 प्रतिशत हो गया और अगले 15 वर्षों में इसके स्थिर रहने की उम्मीद है।

- भारत को इस दशक के अंत तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की उम्मीद है। सरकार के भीतर चर्चाओं ने यह निर्धारित किया है कि 2047 तक भारत को प्रति व्यक्ति आय 18000 डॉलर प्रति वर्ष के साथ 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का प्रयास करना चाहिए।
- घरेलू अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से, भारत की चुनौती अगले 23 वर्षों में वास्तविक प्रति व्यक्ति आय को छह गुना बढ़ाना है। भारत ने पिछले तीन दशकों में वर्ष दर वर्ष आधार पर औसत 6 प्रतिशत की वास्तविक वृद्धि दर्ज की है।

- हालांकि हमारी श्रम शक्ति इस चुनौती के केंद्र में है। तीव्र और बेहतर विकास का मतलब है कि अधिक से अधिक कर्मचारी ज्यादा वेतन पर बेहतर काम कर पाएंगे। इसके लिए बेहतर कौशल से सुसज्जित कर्मचारियों की जरूरत होगी।

रोजगार और बेरोजगारी के परिभाषा का मुद्दा:

- रोजगार को लेकर मौजूदा बहस को ध्यान से समझने के लिए जरूरी है कि हम अंतर्निहित मापन और परिभाषा संबंधी मुद्दों पर ध्यान दें। वैश्विक डेटाबेस के साथ भारतीय परिदृश्य का विश्लेषण करने में यह महत्वपूर्ण हो जाता है। सबसे महत्वपूर्ण रोजगार के विषय के लिए, रोजगार की दो महत्वपूर्ण परिभाषाएं दी गई हैं:
- पहली परिभाषा है अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) की रोजगार की लगभग सार्वभौमिक परिभाषा- वर्तमान साप्ताहिक स्थिति (CWS) या "क्या आपने पिछले हफ्ते कम से कम 1 घंटा काम किया"।
- दूसरी परिभाषा शायद भारत के लिए अनूठी हो, सामान्य स्थिति (US)' या "पिछले साल छह महीने से अधिक समय तक आपका प्राथमिक और द्वितीयक रोजगार क्या था"?

- भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिए 'सामान्य स्थिति', रोज़गार का ज्यादा उपयुक्त संकेतक है, जहां कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा कृषि में लगा हुआ है। इसका सीधा-सा कारण यह है कि काम का वृहद क्षेत्र कृषि रोजगार की मौसम-विशिष्ट प्रकृति को बेहतर ढंग से दर्शाता है।

रोजगार का बेहतर आंकड़ा:

- भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा एकत्र किए गए डेटा का अनुमान है कि 2017-18 से 2021-22 तक 8 करोड़ से अधिक रोजगार के अवसर पैदा हुए। यह औसतन प्रति वर्ष 2 करोड़ से अधिक है।
- इसी तरह, आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) के आंकड़ों से पता चलता है कि पिछले 5 वर्षों के दौरान, श्रम बल में शामिल होने वाले लोगों की संख्या की तुलना में अधिक रोज़गार के अवसर पैदा हुए हैं। इसके परिणामस्वरूप बेरोज़गारी दर में लगातार कमी आई है।
- जुलाई 2023-जून 2024 के दौरान 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों के लिए श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) 60.1 प्रतिशत थी। जुलाई 2022-जून 2023 के दौरान 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों के लिए कुल LFPR (सामान्य स्थिति) 57.9 प्रतिशत से बढ़कर जुलाई 2023-जून 2024 के दौरान 60.1 प्रतिशत

हो गई है। इसी तरह, सामान्य स्थिति में 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों के बीच श्रमिक जनसंख्या अनुपात (WPR) जुलाई 2022 जून 2023 के दौरान 56.0 प्रतिशत से बढ़कर जुलाई 2023-जून 2024 के दौरान 58.2 प्रतिशत हो गया है।

रोजगार परिदृश्य से जुड़े संरचनात्मक आयाम:

- रोजगार के व्यवहारिक आयाम भारतीय अर्थव्यवस्था के संरचनात्मक परिवर्तन से संबंधित है।
- पहला, भारत में औद्योगीकरण की शुरुआत धीमी रही है और इसलिए पारंपरिक व्यवसायों से मुक्त श्रमिकों के अवशोषण की दर धीमी रही है। 1980 के दशक के बाद गैर-कृषि गतिविधियों के विस्तार ने गति पकड़ी। इससे सकल घरेलू उत्पाद में तेजी आई। किंतु, आर्थिक परिवर्तन जनसांख्यिकीय परिवर्तन के साथ तालमेल नहीं रख सका। हालांकि, पिछले दशक में रोजगार-जनसंख्या अनुपात में सुधार देखा गया है। हालांकि यह प्रगति है, लेकिन भारत और उसके समकक्ष देशों का पिछला प्रदर्शन बताता है कि आगे और सुधार संभव है। ऐसे में अगर इसका लाभ उठाया जाए, तो यह विकास का एक इंजन बन सकता है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- दूसरा, अधिकांश आर्थिक मॉडलों में, वास्तविक मजदूरी श्रम उत्पादकता से जुड़ी होती है। इसका यह अर्थ है कि वहीं काम कर रहे लोगों द्वारा कम किया जा सकता है। बढ़ती श्रम उत्पादकता आम तौर पर दोनों को दर्शाती है। इसे अर्थशास्त्री बेहतर मानव पूंजी (बेहतर शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य और बेहतर कौशल, साथ ही बेहतर कार्य व्यवहार) और प्रौद्योगिकी कहते हैं। स्पष्ट रूप से भारत के अमृत काल में, भारत को बढ़ती आय और अधिक रोजगार दोनों का लक्ष्य रखना चाहिए। यह एक प्रेरणा के साथ-साथ तेज आर्थिक विकास का स्रोत भी है। अंततः एक ऐसी रणनीति के लिए अनिवार्य है, जिसका लक्ष्य भारत के मानव संपदा का सर्वोत्तम इस्तेमाल करना है।
- यदि हम बेरोजगारी की समस्या का समाधान करने की बात करते हैं तो उत्पादकता और आर्थिक विकास दो सहवर्ती कारक हैं।
- भारत का दीर्घकालिक उत्पादकता रिकॉर्ड अच्छा है। यह वही है जो पिछले तीन दशकों से 6 प्रतिशत विकास के रिकॉर्ड को चिह्नित करता है। उत्पादन वृद्धि का एक अच्छा हिस्सा आदर्श रूप से उत्पादकता में वृद्धि के कारण होना चाहिए।
- इसलिए रोजगार वृद्धि को उत्पादन वृद्धि के साथ तालमेल रखने की आवश्यकता नहीं है और न ही होनी चाहिए। इसलिए विकास में तेजी लाने की आवश्यकता है।

गैर-कृषि क्षेत्र में प्रतिवर्ष 80 लाख रोजगार सृजन की आवश्यकता:

- आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24, उन रोज़गारों का अनुमान देता है, जिन्हें अर्थव्यवस्था को वर्षों में सृजित करने की आवश्यकता है।
- कार्यबल में कृषि की हिस्सेदारी 2023 में 45.8 प्रतिशत से धीरे-धीरे घटकर 2047 में एक-चौथाई रह जाने के साथ, यह अनुमान है कि भारतीय अर्थव्यवस्था को बढ़ते कार्यबल की जरूरतों को पूरा करने के लिए 2030 तक गैर-कृषि क्षेत्र में प्रतिवर्ष औसतन लगभग 80 लाख रोजगार के अवसर सृजित करने की आवश्यकता है।

महिलाएं और युवा:

- भारत में महिला कार्यबल भागीदारी दर एक सकारात्मक संरचनात्मक बदलाव की पुष्टि करती है। महिला कार्यबल भागीदारी (FWPR) दर में 2019 में 24.5 प्रतिशत से 2023 में 37.0 प्रतिशत तक की वृद्धि काफी महत्वपूर्ण है, भले ही यह मुख्य रूप से कृषि क्षेत्र में हो, जिसमें स्वयं के कार्य और अवैतनिक पारिवारिक कार्य शामिल हैं।
- हालांकि महिलाओं की भागीदारी दर में तेजी लाना एक प्रमुख कारक है, जिस पर विकास और समावेशन दोनों के लिए नीतिगत तौर पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

- हमारे युवाओं का मामला भी ऐसा ही है। हम अनुकूल जनसांख्यिकीय लाभांश प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। पहली बार प्रवेश करने वाले या युवाओं में सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति एक व्यापक मुद्दा है। श्रम बाजार में नए प्रवेशकों के आयु वर्ग के लिए, बेरोजगारी दर 2017-18 में 17.8 प्रतिशत से घटकर 2022-23 में 10.0 प्रतिशत हो गई है ।
- वर्तमान श्रम बल की शैक्षिक उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए कौशल की कमी का मुद्दा भी ध्यान का एक अतिरिक्त क्षेत्र होगा।

युवाओं और महिलाओं के रोजगार के मुद्दे पर बजट में प्रावधान:

- रोजगार प्रोत्साहन और कौशल विकास वर्तमान केंद्रीय बजट के मूल में हैं। रोजगार सृजन के लिए तीन योजनाएं पैकेज का हिस्सा हैं।
- इसमें पहली बार नए प्रवेशकों के लिए श्रम सब्सिडी शामिल है। महिलाओं के नेतृत्व में विकास के एजेंडे को आगे बढ़ाने और महिला श्रम शक्ति की भागीदारी में सुधार करने के लिए, कामकाजी महिलाओं के लिए छात्रावास की स्थापना, क्रेच की स्थापना, महिलाओं के लिए विशेष कौशल कार्यक्रम आयोजित करने और महिलाओं के नेतृत्व वाले SHG/उद्यमों के लिए बाजार पहुंच को बढ़ावा देने सहित कई प्रमुख पहलों को बजट में शामिल किया गया है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारत में फर्मों का छोटा होना रोजगार को लेकर एक चुनौती:

- भारत में फर्मों का छोटा होना एक और चिंता का विषय है। भारतीय फर्म रोजगार के मामले में छोटी होती हैं, धीमी गति से बढ़ती हैं। इतना ही नहीं, यह न केवल औद्योगिक पश्चिम बल्कि चीन और मैक्सिको जैसी अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं की फर्मों की तुलना में कम उत्पादक होती हैं।
- भारत में फर्मों का छोटा आकार और उनसे जुड़ी कम उत्पादकता उनके श्रमिकों की मांग को सीमित करती है। इन पहलों को आगे बढ़ाने या लाभकारी रचनात्मक विनाश के लिए लक्षित दृष्टिकोण के साथ-साथ MSME के प्रसार को बढ़ावा देना आवश्यक है।
- विशेष रूप से MSME क्षेत्र में स्थायी उद्यमों का विकास और विविधीकरण, भारत में लचीले आर्थिक सुधार और निरंतर रोजगार सृजन को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण है।
- नवीनतम उपलब्ध जानकारी के अनुसार, 2015-2016 में भारत में 6.34 करोड़ असंगठित गैर-कृषि MSME थे। इन उद्यमों का एक बड़ा हिस्सा (99 प्रतिशत से अधिक) सूक्ष्म इकाइयां हैं। हालांकि यह इस बात का संकेत हो सकता है कि खासकर ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में यह क्षेत्र उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए अवसर प्रदान करता है।

- इस तरह की प्रवृत्ति के निरंतर प्रचलन ने MSME क्षेत्र में तकनीकी प्रगति और उत्पादकता वृद्धि को गंभीर रूप से बाधित किया है। वास्तव में, इसने MSME और संगठित क्षेत्र की बड़ी फर्मों के बीच उत्पादकता के विशाल अंतर को बढ़ा दिया है। इससे उत्पादकता और आय असमानताओं में वृद्धि हुई है।
- केंद्रीय बजट 2024-25 इस चुनौती की पहचान करता है और MSME को उन प्रमुख क्षेत्रों में से एक के रूप में चिह्नित करता है, जिनमें तत्काल हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

रोजगार क्षेत्र में औपचारिकीकरण की चुनौती:

- समय के साथ रोजगार की स्थिति में सुधार के बावजूद, रोजगार काफी हद तक अनौपचारिक और कम उत्पादकता वाली बनी हुई है।
- 90 प्रतिशत से अधिक रोजगार अनौपचारिक हैं, और 83 प्रतिशत अनौपचारिक क्षेत्र में हैं। यह 2000 में 90 प्रतिशत के करीब था।
- विशेष रूप से नियमित श्रमिकों के आकस्मिक और निचले तबके के मजबूत वेतन वृद्धि, सामाजिक सुरक्षा को मजबूत करना, औपचारिकीकरण के लिए सक्रिय नीतियां और श्रम उत्पादकता को बढ़ावा देना रोजगार की गुणवत्ता में सुधार करने में एक लंबा रास्ता तय करेगा।

अनौपचारिकता का मुद्दा और गैर-कृषि रोजगार की आवश्यकता:

- रोजगार की संरचना में अनौपचारिकता का प्रभुत्व श्रमिकों के क्षेत्रीय वितरण में स्पष्ट है। रोजगार पैटर्न का झुकाव अभी भी कृषि की ओर है, जिसमें लगभग 46.6 प्रतिशत श्रमिक कार्यरत हैं।
- इसके लिए गैर-कृषि रोजगार के सृजन में तेजी लाने के लिए सक्रिय कदम उठाने की आवश्यकता है।
- उभरते श्रम बाजार संकट के किसी भी समाधान के लिए निजी विनिर्माण फर्मों को अपनी महत्वाकांक्षाओं को बढ़ाने की आवश्यकता होगी। निर्यात को प्रोत्साहित करना इस लक्ष्य तक पहुंचने का एक भी विश्वस्त तरीका होगा।

राज्यों की भूमिका:

- श्रम और रोजगार एक राज्य स्तरीय मुद्दा है। इसलिए हम रोजगार सृजन को बढ़ावा देने में भारतीय राज्यों द्वारा निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिकाओं को नजरअंदाज नहीं कर सकते।
- इसके अलावा, जनसांख्यिकीय परिवर्तनों की दरों में अंतर के कारण आर्थिक विकास की प्रकृति और भविष्य की संभावना भारत के विभिन्न राज्यों में अलग-अलग होगी। देश के पूर्व और उत्तर के कुछ राज्यों, विशेष रूप से बिहार और उत्तर प्रदेश में युवाओं की बढ़ती आबादी एक बड़ा आर्थिक अवसर खोलती है। रोजगार के

इच्छुक लोगों की बढ़ती अपेक्षाओं को पूरा करने वाले नए अवसर पैदा करना एक गंभीर नीतिगत चुनौती भी है।

- साथ ही, केरल और तमिलनाडु जैसे राज्यों के लिए, जिनकी आबादी वृद्ध होती जा रही है, श्रम-प्रधान क्षेत्रों के आधार पर भविष्य के विकास की सीमाएं हैं। यहां राज्यों को अनुकूल नीतियों को तैयार करने और लागू करने के लिए पर्याप्त रूप से प्रेरित किया जाना चाहिए। नीति-निर्माण को राज्यों में आंतरिक प्रवास के पैमाने को ध्यान में रखते हुए देश के लिए एक एकीकृत श्रम बाजार का निरंतर लक्ष्य रखना चाहिए।

टिप्पणियां:

- भारत एक ऐसे अनूठे चौराहे पर खड़ा है जहां उसके अपने जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ उठाने की अच्छी खासी संभावना है। अपने देश में कामकाजी आयु वर्ग के लोगों की बड़ी संख्या है। इसके बल पर, राष्ट्र में अपनी अर्थव्यवस्था का काफी हद तक विस्तार करने की क्षमता है।
- केंद्र और राज्य दोनों सरकारें ऐसी केंद्रित रणनीतियों की दिशा में काम कर रही हैं, जो इस जनसांख्यिकीय क्षमता को एक आर्थिक वास्तविकता में बदल दें, जो भारत को 2047 तक एक विकसित समाज और वैश्विक स्तर पर तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना दे।

सिकल सेल रोग के खिलाफ भारत का अभियान:

सिकल सेल रोग क्या है?

- सिकल सेल रोग (SCD) एक आनुवंशिक बीमारी है जिसमें लाल रक्त कोशिकाएँ (RBC) असामान्य रूप से हसिए जैसा आकार ले लेती हैं। अनियमित आकार की ये कोशिकाएं रक्त वाहिकाओं को अवरुद्ध कर कई तरह की स्वास्थ्य संबंधी जटिलताएं पैदा कर सकती हैं।

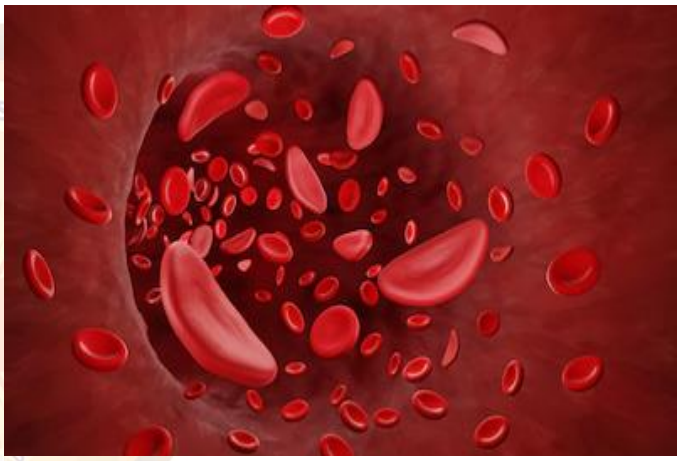

- उल्लेखनीय है कि रक्त में चार प्राथमिक तत्व होते हैं: प्लाज्मा, RBC, श्वेत रक्त कोशिकाएं (WBC) और प्लेटलेट्स। हीमोग्लोबिन RBC में पाया जाने वाला एक प्रोटीन आधारित अणु है। यह हमारे शरीर में ऑक्सीजन का वाहक होने के साथ ही खून को लाल रंग देता है।
- सामान्य RBC आकार में उभयोत्तल होती हैं। उनमें नाभिक नहीं होती और अपने लचीलेपन की बदौलत वे आसानी से आकार बदल सकती हैं। RBC की अनुकूलन क्षमता उसे उन धमनियों में बहने में सक्षम बनाती है जो सबसे सूक्ष्म रक्त

वाहिकाएं हैं। लेकिन सिकल सेल रोग के कारण जीन में परिवर्तन से असामान्य हीमोग्लोबिन जन्म लेता है।

- इसके परिणामस्वरूप RBC अपना सामान्य आकार खो कर हसिए जैसा स्वरूप लेने के साथ ही लचीलापन भी गंवा देती हैं। RBC की कठोरता और असामान्य आकार संकरी रक्त वाहिकाओं में उसके आवागमन को प्रभावित करता है। ये कठोर और चिपचिपी कोशिकाएं छोटी रक्त वाहिकाओं में फंस कर उन्हें अवरुद्ध कर सकती हैं। इससे शरीर के विभिन्न अंगों में खून का प्रवाह धीमा या बाधित हो सकता है। इसके परिणामस्वरूप अंग अस्थाई या स्थाई रूप से काम करना बंद कर सकते हैं और उनके आकार में बदलाव आ सकता है।
- सामान्य RBC 120 दिनों तक जीवित रह सकती है। दूसरी ओर सिकल कोशिका की उम्र 30 से 40 दिन ही होती है। उसका हसिए जैसा विकृत आकार रक्त प्रवाह को इस हद तक बाधित कर देता है कि उत्तकों को ऑक्सीजन नहीं मिल पाता। नतीजतन, RBC का क्षय बढ़ जाता है। इसके अलावा सिकल सेल अपने आकार और कठोरता की वजह से तिल्ली के फिल्टरों में फंस कर नष्ट हो जाती हैं। सिकल सेल तिल्ली को भी नुकसान पहुंचाती हैं। इसके परिणामस्वरूप सिकल सेल रक्ताल्पता, बार-बार संक्रमण, दर्द और सूजन जैसी जटिलताएं पैदा होती हैं।

- सिकल सेल रोग को जीवन भर प्रबंधन की जरूरत होती है। यह शिशुओं और बच्चों के अलावा बालिगों में भी रुग्णता और मृत्यु दर को बढ़ाने में योगदान करता है।

सिकल सेल रोग के प्रकार:

- सामान्य मानव हीमोग्लोबिन A (HBA) में बीटा और अल्फा ग्लोबिन की दो उप-इकाइयां होती हैं। बच्चों और बालिगों में सामान्य हीमोग्लोबिन के उत्पादन के लिए ये दो जीन सही ढंग से और मिल कर काम करने चाहिए।
- सिकल हीमोग्लोबिन (HBS) के HBA का स्थान ले लेने की स्थिति में व्यक्ति सिकल कोशिका का वाहक या सिकल सेल का रोगी हो सकता है। बीटाग्लोबिन श्रृंखला में परिवर्तन के परिणामस्वरूप सिकल हीमोग्लोबिन पैदा होता है।
- अगर बीटाग्लोविन की सिर्फ एक उप-इकाई प्रभावित हो तो व्यक्ति में लक्षण होंगे, लेकिन दोनों बीटाग्लोबिन प्रभावित होने की स्थिति में व्यक्ति को सिकल सेल रोग होगा।
- सिकल सेल के लक्षण वाले व्यक्ति को माता और पिता में से किसी एक से HBS और दूसरे से HBA मिला होता है। दूसरी ओर सिकल सेल रोग के रोगी को माता और पिता दोनों से ही HBS कोड वाले दो जीन मिलते हैं। इससे वे सिकल सेल रोग के वाहक बन जाते हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

सिकल सेल रोग की विरासत:

- **सिकल सेल के रोगी दंपति:** माता और पिता दोनों ही सिकल सेल रोगी हों तो उनकी हर संतान में इस बीमारी की संभावना शत-प्रतिशत रहती है।
- **दंपति में से एक में सिकल सेल के लक्षण और दूसरा सिकल सेल रोगी:** ऐसी स्थिति में संतानों में से 50 प्रतिशत के रोग ग्रस्त और बाकी के उसके वाहक होने की संभावना रहती है।
- **दंपति में से एक स्वस्थ और दूसरा सिकल सेल रोगी:** ऐसे में शत-प्रतिशत संतानों के रोग का वाहक होने की संभावना रहती है।
- **सिकल सेल के लक्षण वाले दंपति:** यदि माता और पिता दोनों ही सिकल सेल के लक्षण के वाहक हों तो संतानों में से 25 प्रतिशत में सिकल सेल रोग होने की आशंका रहती है। संतानों में 25 प्रतिशत के अप्रभावित रहने और 50 प्रतिशत के वाहक होने की संभावना रहती है।

सिकल सेल रोग के लक्षण:

- सिकल सेल रोग से प्रभावित व्यक्ति दो प्रकार के होते हैं:
- **सिकल सेल वाहक:** इनमें सामान्य तौर पर लक्षण नहीं होते। इसलिए उनके मामलों में उपचार की जरूरत भी नहीं पड़ती है।

- **सिकल सेल रोगी:**
  - ➢ इनमें विभिन्न प्रकार की जटिलताएं होती हैं। सिकल सेल रोग वाले व्यक्तियों को गंभीर और दीर्घकालिक जटिलताओं का सामना करना पड़ता है।
  - ➢ इनमें एक्यूट चेस्ट सिंड्रोम जैसे दर्द के दौरे और एवास्क्यूलर नेक्रोसिस शामिल है। एवास्क्यूलर नेक्रोसिस में खून की अपर्याप्त आपूर्ति की वजह से अस्थि उत्तक मर जाते हैं। इस स्थिति में छोटे-छोटे फ्रैक्चर के बाद अंततः हड्डी टूट जाती है।
  - ➢ सिकल सेल रोग की वजह से अनेक अंगों के रोगग्रस्त होने के साथ ही हाथों और पैरों में सूजन जैसी जटिलताएं पैदा हो सकती हैं।
  - ➢ तिल्ली पर सिकल सेल रोग के प्रभाव के कारण रोगी की रोग प्रतिरोधक प्रणाली भी प्रभावित होती है। रोग प्रतिरोधक प्रणाली की कमजोरी के परिणामस्वरूप उनके बार-बार संक्रमित होने की आशंका ज्यादा रहती है।

भारत के जनजातीय समुदायों में सिकल जीन की व्यापकता:

- 2021 के 'ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज' (GBD) अध्ययन में अनुमान लगाया गया कि भारत में लगभग 12 लाख लोग सिकल सेल रोग से प्रभावित हैं।
- भारत में आदिवासी आबादी सिकल सेल रोग से विशेष रूप से ग्रसित है, हालांकि यह गैर-आदिवासियों में भी होता है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की

आदिवासी स्वास्थ्य विशेषज्ञ समिति ने सिकल सेल रोग को उन दस प्रमुख स्वास्थ्य समस्याओं में से एक के रूप में उजागर किया है जो आदिवासी समुदायों को असमान रूप से प्रभावित कर रही हैं।

- भारत में आदिवासी आबादी के बीच सिकल सेल रोग व्यापक रूप से फैला हुआ है। **अनुसूचित जनजाति में लगभग 86 व्यक्तियों में से एक को यह बीमारी होती है।**

सिकल सेल रोग के सामाजिक और आर्थिक प्रभाव:

- विभिन्न अध्ययनों में सिकल सेल रोग से पीड़ित लोगों पर पड़ने वाले भारी वित्तीय बोझ का जिक्र किया गया है। इस बीमारी के प्रभाव से कई सामाजिक और मनोवैज्ञानिक चुनौतियां बढ़ जाती हैं।
- इस रोग के कारण अवसाद, काम से अनुपस्थिति और उत्पादकता में कमी जैसी समस्याएं पैदा होती हैं। नौकरी छूटने के साथ-साथ जीवन की गुणवत्ता पर भी व्यापक प्रभाव पड़ता है। बीमारी की वजह से वित्तीय संकट का भी सामना करना पड़ता है, जिसमें प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों तरह के खर्च शामिल होते हैं।
- प्रत्यक्ष खर्च में स्वास्थ्य सेवा प्रणाली द्वारा वहन किए जाने वाले व्यय शामिल हैं। दूसरी ओर परोक्ष लागतों को बड़े पैमाने पर परिवार और समाज द्वारा वहन किया जाता है।

राष्ट्रीय सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन (NSCAEM):

- भारत में सिकल सेल एनीमिया के प्रसार में कमी लाने और इसके प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय और राज्यों के स्तर पर कई योजनाएं बनाई और लागू की गई हैं।
- भारत सरकार ने इस बीमारी से निपटने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए एक मिशन-मोड दृष्टिकोण अपनाया है।

राष्ट्रीय सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन (NSCAEM):

- प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत राष्ट्रीय सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन (NSCAEM) का शुभारंभ 01 जुलाई, 2023 को मध्य प्रदेश के शहडोल में किया। इस मिशन का उद्देश्य 2047 तक सिकल सेल एनीमिया को खत्म करने के लक्ष्य के साथ सभी सिकल सेल रोगियों को सस्ती, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण देखभाल प्रदान करना और सिकल सेल रोग को फैलने से रोकना है।
- NSCAEM 40 वर्ष तक की आयु के व्यक्तियों की जांच और प्रबंधन के लिए प्रतिबद्ध है। इसका उद्देश्य रोगियों और उनके परिवारों पर सिकल सेल रोग के प्रभाव को कम करना है।
- NSCAEM ने भारत में ऐसे 17 राज्यों की पहचान की है जहां सिकल सेल रोग का प्रभाव काफी अधिक है। ये राज्य हैं: गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, मध्य प्रदेश,

झारखंड, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, तमिलनाडु, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, असम, उत्तर प्रदेश, केरल, बिहार और उत्तराखंड।

- इस बीमारी से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए मिशन के तहत एक रणनीति बनाकर हस्तक्षेप किया जाता है जिसमें सबकी जांच और रोग की प्रारंभिक पहचान, शैक्षिक पहलों के माध्यम से जागरूकता बढ़ाना और विवाह पूर्व परामर्श प्रदान करना शामिल है।
- राज्यों द्वारा जांच प्रयासों की नियमित निगरानी भी की जा रही है। सभी राज्यों द्वारा स्क्रीनिंग किए गए डेटा को संकलित करने के लिए एक डैशबोर्ड और सिकल सेल रोग पोर्टल शुरू किया गया है।
- गैर-आदिवासी जिलों में एक लक्षित जांच दृष्टिकोण लागू किया जा रहा है। इसके तहत राज्यों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर गर्भवती महिलाओं की गर्भ की पहली तिमाही में नियमित जांच के माध्यम से सिकल सेल रोग की रोकथाम पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- सिकल सेल रोग के लिए ऑनलाइन डैशबोर्ड से प्राप्त स्क्रीनिंग डेटा के अनुसार, पिछले वर्ष राष्ट्रीय सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन की शुरुआत के बाद से पोर्टल पर 4.5 करोड़ से अधिक स्क्रीनिंग रिकॉर्ड अपलोड किए गए हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- जांचे गए व्यक्तियों में से लगभग 4.4 करोड़ व्यक्ति सिकल सेल निगेटिव हैं, जबकि 12 लाख से अधिक व्यक्तियों में सिकल सेल लक्षण पाए गए। राज्यों ने 6 नवंबर, 2024 तक कुल 1.5 करोड़ सिकल सेल स्टेटस ID कार्ड वितरित किए हैं।
- सिकल सेल रोग पोर्टल पर 4.5 करोड़ से अधिक व्यक्ति पंजीकृत हैं। वर्ष 2024-25 के लिए सिकल सेल रोग जांच का राष्ट्रीय लक्ष्य 6.3 करोड़ रखा गया है। सबसे अधिक लक्ष्य (4.45 करोड़ से अधिक) वाले राज्य हैं: छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात और ओडिशा।